



Hargharpanditji

॥ कामिका एकादशी ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ कामिका एकादशी ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

कामिका एकादशी का परिचय

श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली एकादशी को कामिका एकादशी कहा जाता है। यह भगवान श्री विष्णु को अत्यंत प्रिय तिथि मानी गई है। ब्रह्मवैवर्त पुराण तथा पद्म पुराण में इसकी महिमा का वर्णन मिलता है। इस एकादशी का व्रत समस्त पापों का नाश करने वाला, मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा भगवान श्रीहरि की विशेष कृपा प्रदान करने वाला माना गया है।

युधिष्ठिर का प्रश्न

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे मधुसूदन! श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? उसकी महिमा, कथा और व्रत का फल कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया—

"हे राजन्! यह 'कामिका एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत करने से मनुष्य के पाप नष्ट होते हैं, समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं और अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है। अब मैं तुम्हें इसका महात्म्य सुनाता हूँ।"

कामिका एकादशी व्रत कथा

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—

प्राचीन समय में एक गाँव में एक क्षत्रिय रहता था। एक दिन किसी कारणवश उसका एक ब्राह्मण के साथ विवाद हो गया। क्रोध में आकर उसने ब्राह्मण की हत्या कर दी। यह अत्यंत गंभीर पाप था। इसके कारण

वह व्यक्ति समाज से बहिष्कृत हो गया और उसके सभी धार्मिक कार्य निष्फल होने लगे।

अपने अपराध पर उसे गहरा पश्चात्ताप हुआ। वह अनेक ऋषि-मुनियों के पास गया और उनसे अपने पाप से मुक्ति का उपाय पूछा। एक महात्मा ने उससे कहा—

"हे पुत्र! श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की कामिका एकादशी का श्रद्धा और नियमपूर्वक व्रत करो। भगवान श्रीविष्णु की उपासना करो, तुलसी जी की पूजा करो और सच्चे मन से अपने अपराध का प्रायश्चित्त करो। भगवान अवश्य तुम्हें क्षमा करेंगे।"

उस व्यक्ति ने पूर्ण श्रद्धा के साथ कामिका एकादशी का व्रत किया। उसने भगवान श्रीहरि की पूजा की, रात्रि में भजन-कीर्तन किया, तुलसी जी को जल अर्पित किया और निरंतर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जप किया।

भगवान श्रीविष्णु की कृपा से उसका हृदय पूर्णतः निर्मल हो गया। उसके पापों का क्षय हुआ और उसे पुनः धर्ममय जीवन प्राप्त हुआ। अंत में भगवान की कृपा से उसे उत्तम गति और मोक्ष की प्राप्ति हुई।

तुलसी पूजा का विशेष महत्व

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा—

"कामिका एकादशी के दिन तुलसी जी का पूजन अत्यंत शुभ माना गया है। जो भक्त श्रद्धापूर्वक तुलसी को जल अर्पित करता है, दीपक जलाता है और भगवान विष्णु की आराधना करता है, उसे अनेक यज्ञों और तीर्थस्नानों के समान पुण्य प्राप्त होता है।"

इस दिन तुलसी के समीप दीपदान करना, भगवान विष्णु को तुलसी दल अर्पित करना तथा हरिनाम का जप करना विशेष फलदायी माना गया है।

भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! कामिका एकादशी का व्रत सभी पापों का नाश करने वाला, मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा भगवान श्रीविष्णु की विशेष कृपा प्रदान करने वाला है। जो श्रद्धापूर्वक इस व्रत का पालन करता है, वह इस लोक में सुख और समृद्धि प्राप्त करता है तथा अंत में वैकुण्ठ धाम को प्राप्त होता है।"

कामिका एकादशी का संदेश

कामिका एकादशी हमें सिखाती है कि मनुष्य से चाहे कितनी भी बड़ी भूल क्यों न हो जाए, यदि वह सच्चे मन से पश्चात्ताप करे, धर्म के मार्ग पर लौटे और भगवान श्रीहरि की शरण ग्रहण करे, तो ईश्वर की कृपा से उसका जीवन पवित्र और मंगलमय बन सकता है। यह व्रत भक्ति, संयम, क्षमा और आत्मशुद्धि का संदेश देता है।

व्रत का फल

शास्त्रों के अनुसार कामिका एकादशी का व्रत करने से—

समस्त पापों का नाश होता है।

भगवान श्रीविष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

तुलसी पूजन का अक्षय पुण्य मिलता है।

मनोकामनाओं की सिद्धि होती है।

सुख, शांति और समृद्धि प्राप्त होती है।

अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

॥ श्री कामिका एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥